Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

हीनयान एवं महायान बौद्धमतों का अजंता शैल समूहों मे विवेचनात्मक अध्ययन

श्रीमती कौशिकी अग्रहरि
शोधार्थी, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, सतना, मध्य प्रदेश।
डॉ.श्याम बिहारी अग्रवाल एवं डॉ. प्रमिला सिंह
शोध निर्देशक, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, सतना, मध्य प्रदेश।

Article Info
Volume 6, Issue 6
Page Number : 59-62
Publication Issue :
November-December-2023
Article History
Accepted : 10 Nov 2023
Published : 30 Nov 2023

शोधसारांश – अजन्ता की यह वाद में निर्मित सभी गुहायें राजा हरिसेन के शासनकाल के लगभग निर्मित हुई और उपरोक्त कलानुक्रम इस समय के बने हुए भित्ति चित्रों पर भी लागू किया जा सकता है। हालाकि इन सभी भित्तिचित्रों में प्रथम–प्रथम शैलीगत विशेषताओं का समागम है। जिन्हें देखकर कभी–कभी कलानुक्रम के प्रतीकात्मक स्थिति का भी आभास होता है। अनायास ही वृहतविकारों की भव्य सुसंयोजित भित्तियों के अंतराल पर एकाग्र दृष्टिपात से यही अनुभव होता है कि जैसे इन्हें मानचित्र सर्जना हेतु निमित किया गया था। शायद इसीलिए इन भित्तिचित्रों पर कहीं भी कोई ऐसा उत्कीर्ण कार्य नहीं किया गया जो भित्तिचित्रों के आकर्षण में अवरोधक बन सके।

मुख्य शब्द– हीनयान, महायान, बौद्व, अजंता, शैल,भित्तिचित्र, धर्म।

चैत्य शब्द (चित्यअय) पूजास्थान का बोधक है। बौद्धकाल से चैत्य का महानसंघ है। बौद्ध कला अपने धर्म के समानुकूल दो मत हीनयान तथा महायान के समानता ही अग्रसर हुई है। हीनयान सम्प्रदाय को बैद्धकाल के विभाग का प्रथम चरण माना जाता है जिसके अन्तर्गत बुद्ध को प्रतिमा रूप में अंकित किया गया है। बौद्ध साहित्य के अध्ययन से विदित होता है कि उन्होंने आनन्द से महापुरूषों के शरीर अवशेष पर स्तूप बनाने की चर्चा की थी जिसका उल्लेख महापीर नित्वान सूत्र में किया गया है। पूजा की परम्परा संभवतः अशोक के शासन काल में आरम्भ हुई। उसका कारण यह था कि भगवान बुद्ध के चार प्रधानप्रतीक थे जिसे उनके जीवन की घटनाओं को व्यक्त किया जाता था यह थे हाथी, बोधिसत्त्व, धर्मचक्र और परिनिर्वाण का प्रतीक स्तूप। आरमी में बौद्धमत की प्रथम शाखा हीनयान में प्रतीक का समादर ही सर्वश्रेष्ठ पूजा समझा गया। जिसका प्रदर्शन भारत की प्राचीन कला में दिखायी पड़ता है।[1] हीनयान धर्म में प्रतीकों का पूजन मात्र निहित था। उन प्रतीकों में स्तूप को उत्कीर्णा करना कलाकारों के लिए सरलकार्य था। इसी कारण गुहा में स्तूप का आकार खोदा गया और गुहा 'चैत्य' के नाम से प्रसिद्ध हुई।[2]

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

चैत्य संख्या 10 के ही समीप एक अन्य चैत्य संख्या 9 चित्रित है। जो आकार में 45 फुट लम्बी 22 फुट चौड़ी तथा 23 फुट ऊँची है। समीप के बड़े चैत्य की उर्ध्व्य यह पहाड़ की निचली चट्टानों पर स्थित है। तथा इसका निर्माण चैत्य संख्या 10 के कुछ बाद हुआ। इस गुहा का आन्तरिक विन्यास गुहा 10 से कुछ भिन्न है। तथा इस चैत्य का वातायन विशिष्ट है। गुहा के अग्रभाग पर उत्कीर्ण मूर्ति के गुहा के निर्माण काल से काफी समय बाद की है।

हीनयान मत के अन्तर्गत चैत्यों के अतिरिक्त विहारों का भी निर्माण हुआ और अजन्ता में ऐसे विहार क्रमशः गुहा संख्या 8, 12, 13 तथा 30 अथवा 15 ए पर स्थित है। सज्जा की दृष्टि से यह अत्यन्त साधारण है। प्रायः इनके चौकोर प्रवेश द्वार के ऊपर कहीं–कहीं पट्टियाँ, चैत्य वातायन, लहराते हुए कंगूरे या फिर साधारण ज्यामितीय आकारों का अलंकरण मिलता है। यह सभी प्रारूप पत्थर पर उत्तीर्ण किये गये हैं। अन्दर के बड़े सभागृह के अतिरिक्त बाहर दोनों ओर छोटे–छोटे कक्ष भी खोदकर निकाले गये हैं। जिनमें एक समय में सम्भवतः एक ही भिक्षु आवास करता रहा होगा[3] हीनयान गुहा में विहारों के अन्दर बड़े भाग तथा पार्श्व में कोठरियाँ बनाने की प्रथा चल पड़ी थी। जो कालांतर में भी परिवर्तित हो गयी होगी। अजन्ता के भू–भाग में कई गुहाओं का निर्माण उसकी प्रधानता का द्योतक है। जहाँ हजारों भिक्षु निवास करते थे। अजन्ता में चैत्य संख्या 10 के साथ ही गुहा संख्या 12 विहार का सर्वप्रथम निर्माण हुआ। उसके पश्चात गुहा विहार संख्या 8 व 13 बनाये गये।[4]

हीनयान मठ के अन्तर्गत बने हुए विहारों में गुहा संख्या 30 लघु आकार की प्राचीनतम गुहा है। गुहा में एक छोटे आकार का सभागृह है। जिसके तीन आवास कक्ष संलग्न हैं इन कक्षों में बौद्ध–भिक्षुओं के आराम हेतु पत्थर से ही काटकर तकियों का भी निर्माण किया गया है। सम्भवतः बौद्ध भिक्षु इनका प्रयोग सोने के कक्षों में करते थे।[5] गुहा संख्या 30 को अभी कुछ समय पूर्व ही खोजा गया है। जनवरी माह 1955 में ये गुहा संख्या 19 के जीने के मार्ग पर एक भू–स्खलन ने इस मार्ग में अवरोध उत्पन्न किया। रास्ते की मरम्मत करते समय मलवा हटाने पर अनायास ही एक ऐसी दीवार अवशिष्ट हुई जिन पर एक स्तूप का प्रारूप उत्कीर्ण अवस्था में खुदा हुआ था। बाद में जब सावधानी से इस उत्खनन कार्य को आगे बढ़ाया गया तो एक महत्त्वपूर्ण गुहा का पता चला और खोजों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि इसका निर्माण काल हीनयान मत के अन्तर्गत हुआ, इस लघु आकार में विहार के कक्षों के ऊपरी किनारे पर बौद्धमत के प्रति चैत्यवातायन तथा अर्ध कमल के गोलाकार उभरी हुई अवस्था में उत्कीर्ण है।

हीनयान मत की अवनति के साथ ही महायान मत का आर्विभाव हुआ तदन्तर इस मत के अनुयायियों में भगवान बुद्ध की प्रतिमा चित्रांकन के विपरीत प्रतिमा निर्माण के प्रति जागरूकता आयी ब्राह्मण धर्म के प्रवल वेग के कारण ई.पू. प्रतीक प्रधान कला को समाज में स्थान व निवास का अहमेव कुश्यव युग की भारतीय कला में हीनयान के समान प्रतीकों को महायान ने त्यागकर बुद्ध की प्रतिभा का निर्माण काल यहीं इस युग की पहली विशेषता थी। महायान की दूसरी विशेषता बौद्धिसत्त्व की कल्पना है। दो प्रकार की प्रतिमाओं – बुद्ध व बोद्धिसत्त्व से पूरे समाज को कलाकार ने स्थापित कर दिया।[6] इस प्रकार महायान मत से प्रभावित होकर जिन चैत्यों का निर्माण कराया गया व पहले चैत्यों से बहुत थे।

अजन्ता की अनेक गुहायें महायान मत से प्रेरणा लेकर विभक्त हुई। लेकिन सभी गुहाओं का क्रमानुक्रम के निश्चय हेतु गुहाओं के स्थापत्य के विकास में कुछ निश्चित प्रारूपों को आधार माना। फलस्वरूप गुहाओं को 460 से 500 ए.डी. के समय निर्मित माना जा सकता है।

इस प्रकार अजन्ता की यह वाद में निर्मित सभी गुहायें राजा हरिसेन के शासनकाल के लगभग निर्मित हुई और उपरोक्त कलानुक्रम इस समय के बने हुए भित्ति चित्रों पर भी लागू किया जा सकता है। हालाकि इन सभी भित्तिचित्रों में प्रथम–प्रथम शैलीगत विशेषताओं का समागम है। जिन्हें देखकर कभी–कभी कलानुक्रम के प्रतीकात्मक स्थिति का भी आभास होता है। अनायास ही वृहतविकारों की भव्य सुसंयोजित भित्तियों के अंतराल पर एकाग्र दृष्टिपात से यही अनुभव होता है कि जैसे इन्हें मानचित्र सर्जना हेतु निमित किया गया था। शायद इसीलिए इन भित्तिचित्रों पर कहीं भी कोई ऐसा उत्कीर्ण कार्य नहीं किया गया जो भित्तिचित्रों के आकर्षण में अवरोधक बन सके।

अजन्ता के चार विहारों की संख्या 1, 2, 16, 17 में उत्तम ढंग की भित्ति चित्रकारी दिखाई पड़ती है। विहारों के स्तम्भ व दीवारों पर विलक्षण सौंदर्य लिए चित्रकारी की गयी है। इनमें गुहा संख्या 1, भगवान बुद्ध के जीवन की घटनाओं, स्तूप पूजा तथा पशुओं और पुष्पों की आकृतियों से भरी पड़ी है। कई जातक चित्र बड़े ही प्रभावपूर्ण ढंग से चित्रित किये गये हैं। इस विहार की छतों पर बने अलंकारिक चित्र चित्रित हैं। पुष्पलता, पुष्पावली तथा पशुपक्षी आदि चित्रों के कोष का कार्य करता है।[7]

गुहा मंदिर सं० 2 में बाहरी बरामदे में पहली गुहा के समान चित्र मिलता है खम्बे में नाना प्रकार के अलंकरण दिखाई पड़ते हैं। तथा बौधिसत्त्वों का सुन्दर चित्रण है। यहाँ के चित्र क्षतिग्रस्त है फिर भी चित्रों के आकर्षण में कोई कमी नहीं है। प्रोफेसर लोरेन्जों सिसोनी इस गुहा के चित्रों के रेखा सौंदर्य पर बहुत मुग्ध हुए। चित्र के अन्तराल में अनेक अलाकृतियों का समन्वित संयोजन तथा उसके रेखांकन के प्रभाव की तुलना लेनार्डो द विन्सी के उस चित्र से कर बैठे, जो फ्लोरेस की एक गैलरी में संग्रहीत है। अजन्ता के भित्ति चित्रों के सिसोनी ने बड़े निकट से देखा है।[8]

16वीं गुहा मंदिर अजन्ता के सुन्दरतम विहारों में से एक है इस विहार की चित्रकारी का काम अधिकतर नष्ट हो चुका है। इसमें सबसे प्रसिद्ध चित्र 'यक्ष की दीक्षा' नाम से प्रसिद्ध है। दायी दीवार पर बुद्ध के जीवन की सुजाता की खीर भेंट दृश्य, राजगृह के बाजार में शिक्षा पात्र लिए बुद्ध आदि अनेक सराहनीय चित्र हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 वासुदेव उपाध्याय–प्राचीन भारतीय स्तूप गुफा एवं मन्दिर पृ०स० 145–147संस्करण 1972 इलाहाबाद।

2 याजदानी–''गाइड टू अजन्ता फ्रेस्कोज, पृ०सं० 18 संस्करण 1949

3 वासुदेव उपाध्याय – प्राचीन भारतीय मूर्ति विलास–1970 अध्याय–3 पृ०सं० 50–51

4 ए०घोष–अजन्ता मिनीचेयर–पृ० 19

5 वासुदेव उपाध्याय – प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा व मन्दिर 1972 अध्याय 5 पृ०सं० 145

6 आर००एस०गुप्ता, अजन्ता एलोरा – पृ०सं० 37–38

7 वासुदेव शरण अग्रवाल–अध्याय, प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा, मंदिर, 1972 अध्याय द्वितीय पृ०11

8 वासुदेव शरण अग्रवाल–अध्याय, प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा, मंदिर, 1972 अध्याय द्वितीय पृ०107